अध्याय - 6
भारत : प्राकृतिक वनस्पति एवं वन्य जीव

हम पढ़ेंगे

6.1 प्राकृतिक वनस्पति से आशय।
6.2 वनस्पति को प्रभावित करने वाले तत्व।
6.3 वनों के प्रकार व वन्य जीव वितरण।
6.4 औषधीय वनस्पतियाँ।
6.5 वनों का महत्व।
6.6 वन संरक्षण के उपाय।
6.7 वन्य जीव संरक्षण।
6.8 मध्य प्रदेश में जीव जन्तु, राष्ट्रीय उद्यान व अभ्यारण्य।

6.1 प्राकृतिक वनस्पति से आशय

प्राकृतिक रूप से मानव के हस्तक्षेप के बिना उगने वाले पेड़-पौधों को **प्राकृतिक वनस्पति** कहते हैं। विभिन्न वनस्पति, वन इत्यादि प्राकृतिक वनस्पति के अन्तर्गत आते हैं। हमारा देश विश्व के 12 मुख्य जैव विविधता वाले देशों में से एक है। यहां लगभग 47,000 प्रकार के पेड़-पौधे पाए जाते हैं। इस कारण भारत का विश्व में दसवां तथा एशिया में चौथा स्थान है। सन् 2003 में देश में वनों का कुल क्षेत्रफल 6.8 लाख वर्ग कि.मी. था जो कुल क्षेत्रफल का 20.55% है।

जो वनस्पति मूलरूप से भारतीय है उसे **देशज** वनस्पति कहते हैं लेकिन जो पौधे भारत के बाहर से आए हैं उन्हें **विदेशज** पौधे कहते हैं। भारत में देशज एवं विदेशज दोनों ही प्रकार की वनस्पतियाँ पायी जाती है। कई विदेशज वनस्पतियाँ हमारी समस्या बनी हुई हैं। ये उपयोगी वनस्पति आवरण को कम कर देते हैं एवं आर्थिक रूप से लाभकारी वृक्षों की वृद्धि में रूकावट डालते हैं। अप्रत्यक्ष रूप से कुछ तो हमारे लिए समस्या बन गए हैं जैसे लेण्टाना तथा जलकुंभी। अब लेण्टाना हमारे वनों एवं चरागाहों में फैल गया है तथा जलकुंभी ने तो बड़े पैमाने पर नदी, नालों तथा तालाबों के मुंह बंद कर दिए है । बंगाल के नदी नालों के संदर्भ में जलकुंभी को बंगााल का आतंक भी कहा जाने लगा है।

6.2 वनस्पति को प्रभावित करने वाले तत्व

किसी क्षेत्र की वनस्पति के विकास पर उस क्षेत्र के भौगोलिक तत्वों का प्रभाव पड़ता है । इन तत्वों में वर्षा, तापमान, आर्द्रता, मिट्टी, समुद्र तल से ऊंचाई तथा भूगर्भिक संरचना महत्वपूर्ण हैं ।

1. **धरातल** – इसके अंतर्गत भूमि का उच्चावच एवं मिट्टी का स्वरूप सम्मिलित है-

भूमि – भूमि का वनस्पति पर प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष प्रभाव पड़ता है। पर्वत, पठार एवं मैदान में एक ही प्रकार की वनस्पति नहीं होती है। समतल भूमि पर कृषि की जाती है। ऊबड़-खाबड़ तथा असमान भू-भाग पर जंगल व घास के मैदान मिलते हैं, जो कि वन्य प्राणियों के आश्रय स्थल हैं।

मिट्टी – विभिन्न स्थानों पर अलग-अलग प्रकार की मिट्टी पाई जाती है, जो विविध प्रकार की वनस्पति का आधार है। नदियों के डेल्टाई क्षेत्रों में मैग्रोंव वन, ऊँचे पर्वतों के ढलानों पर शंकुधारी वन पाये जाते हैं। मैदानी क्षेत्र कृषि क्षेत्र के लिए अनुकूल है तो पठारी क्षेत्रों पर सामान्यत: पर्णपाती वन मिलते हैं।

2. जलवायु

तापमान – प्रत्येक पौधे के अंकुरण, वृद्धि एवं प्रजनन के लिए अनुकूल तापमान की आवश्यकता होती है । उष्ण कटिबन्ध में उच्च तापमान और आर्द्रता के कारण विविध प्रकार के पेड़ पौधे उगते हैं । तापमान के 6^0 से 9^0 सेल्सियस तक नीचे चले जाने पर पेड़–पौधों की वृद्धि रूक जाती है। ऊँचे पर्वतों पर तापमान कम होने के कारण वनस्पति का वर्द्धन काल छोटा होता है।

सूर्य का प्रकाश – किसी स्थान पर सूर्य के प्रकाश का समय उस स्थान के अक्षांश, समुद्र तल से ऊँचाई एवं ऋतु पर निर्भर करता है । प्रकाश के अधिक समय तक मिलने के कारण वृक्ष गर्मी की ऋतु में जल्दी बढ़ते हैं। जैसे – हिमालय पर्वतीय क्षेत्र की दक्षिणी ढलानों पर अधिक सूर्यताप मिलने के कारण उत्तरी ढलानों की अपेक्षा अधिक सघन वनस्पति पायी जाती है।

वर्षा – भारी वर्षा वाले क्षेत्रों में बड़े–बड़े पेड़ सघनता में पाये जाते हैं। कम वर्षा वाले क्षेत्रों में बौने वृक्ष, घास तथा झाड़ियां विरलता में पायी जाती है । मरूस्थलीय क्षेत्रों में पेड़–पौधों की जड़ें लम्बी होती हैं। वाष्पोत्सर्जन से आर्द्रता की कमी को रोकने हेतु कुछ पेड़–पौधों की पत्तियां चिकनी एवं कांटेदार होती है। थार मरूस्थल की वनस्पति पानी की कमी के कारण कांटेदार होती है।

6.3 वनों के प्रकार व वन्य जीव वितरण

वन उस बड़े भू–भाग को कहते है, जो पेड़–पौधों तथा झाड़ियों द्वारा आच्छादित होता है। भारतीय वनों को प्रशासनिक एवं प्राकृतिक आधार पर बांट कर हम अध्ययन कर सकते हैं–

भारत में वनक्षेत्र

- कुल वन क्षेत्र के अनुपात की दृष्टि से उत्तरपूर्व भारत का प्रथम स्थान है अरूणाचल प्रदेश, मेघालय, मिजोरम, मणिपुर तथा नागालैंड में कुल क्षेत्र के 70% भाग में वन हैं ।
- सिक्किम में 44% और त्रिपुरा में 55% क्षेत्र पर वन है ।
- असम, केरल और गोवा में 25% भाग से अधिक पर वन है ।
- मध्यप्रदेश और छत्तीसगढ़ में 30% क्षेत्र में वन हैं।
- पश्चिमी बंगाल में केवल 9% क्षेत्र पर ही वन हैं ।
- पंजाब, दिल्ली, राजस्थान और गुजरात में 5% भाग पर वन क्षेत्र हैं।
- सबसे कम वन हरियाणा में कुल भूमि का 1.2% भाग में है।

1. प्रशासनिक आधार : इस आधार पर वनों को तीन श्रेणियों में रखा जाता है।

आरक्षित वन – जो वन इमारती लकड़ी अथवा वन उत्पादों को प्राप्त करने के लिए स्थायी रूप से सुरक्षित किये गये हैं तथा इनमें पशुओं को चराने तथा खेती करने की अनुमति प्राप्त नहीं होती है, आरक्षित वन कहलाते हैं।

संरक्षित वन – वे वन जिनमें पशुओं को चराने व खेती करने की अनुमति सामान्य प्रतिबंधों के साथ दे दी जाती है। संरक्षित वन कहलाते है।

अवर्गीकृत वन – वे वन जो न तो आरक्षित हैं और न ही सुरक्षित हैं, अवर्गीकृत वन कहलाते हैं।

2. प्राकृतिक आधार : प्राकृतिक आधार पर वनों को प्रमुखतया पांच प्रकारों में बांटा जाता है।

उष्ण कटिबन्धीय सदाबहार वन : ये वन दो प्रकार के होते हैं –

(अ) आर्द्र उष्ण कटिबन्धीय सदाबहार वन : ये वन भारत के उन प्रदेशों में पाये जाते हैं जहां वार्षिक

वर्षा 300 से.मी. से अधिक होती है तथा शुष्क ऋतु छोटी होती है। इस तरह के वन विषुवतरेखीय वनस्पति से मिलते जुलते रहते हैं। ये वन अत्यधिक घने हैं पेड़ों की लम्बाई 60 मीटर या इससे अधिक होती है। इन वनों में विभिन्न ऊंचाईयों के कई स्तर देखने को मिलते हैं। इन वनों के पेड़ों के नीचे झाड़ियाँ, बेलें, लताएँ आदि का सघन जाल पाया जाता है । घास प्रायः नहीं होती है ।

प्रति इकाई क्षेत्र पर पौधों की प्रजातियां इतनी अधिक होती है कि इनका व्यापारिक उपयोग नहीं हो पाता है। इनके पेड़ों की लकड़ी अधिक कठोर व भारी होती है । अतः काटने एवं परिवहन में अधिक श्रम लगता है । वृक्षों में पतझड़ होने का कोई निश्चित समय नहीं होता है । अतः ये वन सदैव हरे-भरे लगते हैं । रबर, महोगनी, सिनकोना, बांस, ताड़ प्रमुख वृक्ष हैं। भारत में ये वन पश्चिमी घाट के दक्षिणी भाग, केरल, कर्नाटक तथा उत्तर पूर्व की पहाड़ियों में प्रमुखता से पाये जाते हैं।

(ब) आर्द्र उष्ण कटिबन्धीय अर्द्ध सदाबहार वन : ये वन 200 से 300 से.मी. वार्षिक वर्षा वाले क्षेत्रों में सीमित हैं। अतः ये सदाबहार वन तथा आर्द्र-शीतोष्ण पर्णपाती वनों के मध्यवर्ती भागों में पाये जाते हैं। मेघालय, मिजोरम तथा अंडमान और निकोबार द्वीपों में ये वन मिलते हैं। ये वन आर्द्र सदाहरित वनों से कम घने होते हैं। रोजवुड, ऐनी, तेलसर, चम्पा, जून, गुरजन, आइसवुड, एबोनी, लारेल प्रमुख वृक्ष हैं। स्थानान्तरी कृषि एवं अत्यधिक उपयोग के कारण इन वनों का अधिक ह्रास हुआ है ।

उष्णकटिबंधीय सदाबहार वन क्षेत्र के वन्य जीव- हाथी, बंदर, लैमूर, हिरण तथा एक सींग वाले गैंडे असम और पश्चिम बंगाल के दलदली क्षेत्रों में मुख्यतः मिलते हैं। इसके साथ ही इन वनों में कई प्रकार के पक्षी, चमगादड़ व रेंगने वाले जीव भी पाये जाते हैं।

(2) उष्ण कटिबन्धीय पर्णपाती (पतझड़) वन : यह भारत की सबसे विस्तृत वन पेटी है इसे मानसूनी वन भी कहते हैं । यह कुल वन क्षेत्र के 39% भाग में फैले हैं । (वनस्पति मानचित्र में इनका वितरण देखिए)

जल की उपलब्धता के आधार पर इन वनों को आर्द्र पर्णपाती एवं शुष्क पर्णपाती, दो भागों में बांटा जा सकता है। भारत के जिन भागों में 100 से 200 से.मी. वर्षा होती है वहाँ आर्द्र पर्णपाती वन पाये जाते हैं। भारत के पूर्वी भाग, उत्तरी-पूर्वी राज्य, हिमालय के गिरीपदीय ढाल, झारखण्ड, पश्चिमी उड़ीसा, छत्तीसगढ़, पश्चिमी घाट के पूर्वी ढाल इन वनों के क्षेत्र हैं सागौन, इन वनों की प्रमुख प्रजाति है। बांस, साल, शीशम, चंदन, खैर, कुसुम, अर्जुन व शहतूत अन्य वृक्ष हैं। इन वनों के वृक्ष वर्ष में एक बार शुष्क ऋतु में अपनी पत्तियां 6 से 8 सप्ताह के लिए गिरा देते हैं। लकड़ी के लिए पेड़ों की अंधाधुन्ध कटाई एवं कृषि कार्य में उपयोग होने के कारण इन वनों का अत्यधिक विनाश हुआ है।

जिन भागों में वर्षा 70 से 100 से.मी. होती है वहां शुष्क पर्णपाती वन पाये जाते हैं प्रायद्वीपीय पठार, उत्तर प्रदेश एवं बिहार इन वनों के मुख्य क्षेत्र हैं इनके मुख्य वृक्ष सागौन, साल, पीपल, नीम, आम आदि है।

पर्णपाती वनों में वन्य जीव : इन क्षेत्रों में सिंह शेर, बाइसन, नीलगाय, सुअर, हिरण, हाथी, विभिन्न प्रकार के पक्षी, छिपकली, साँप व कछुए प्रमुख है।

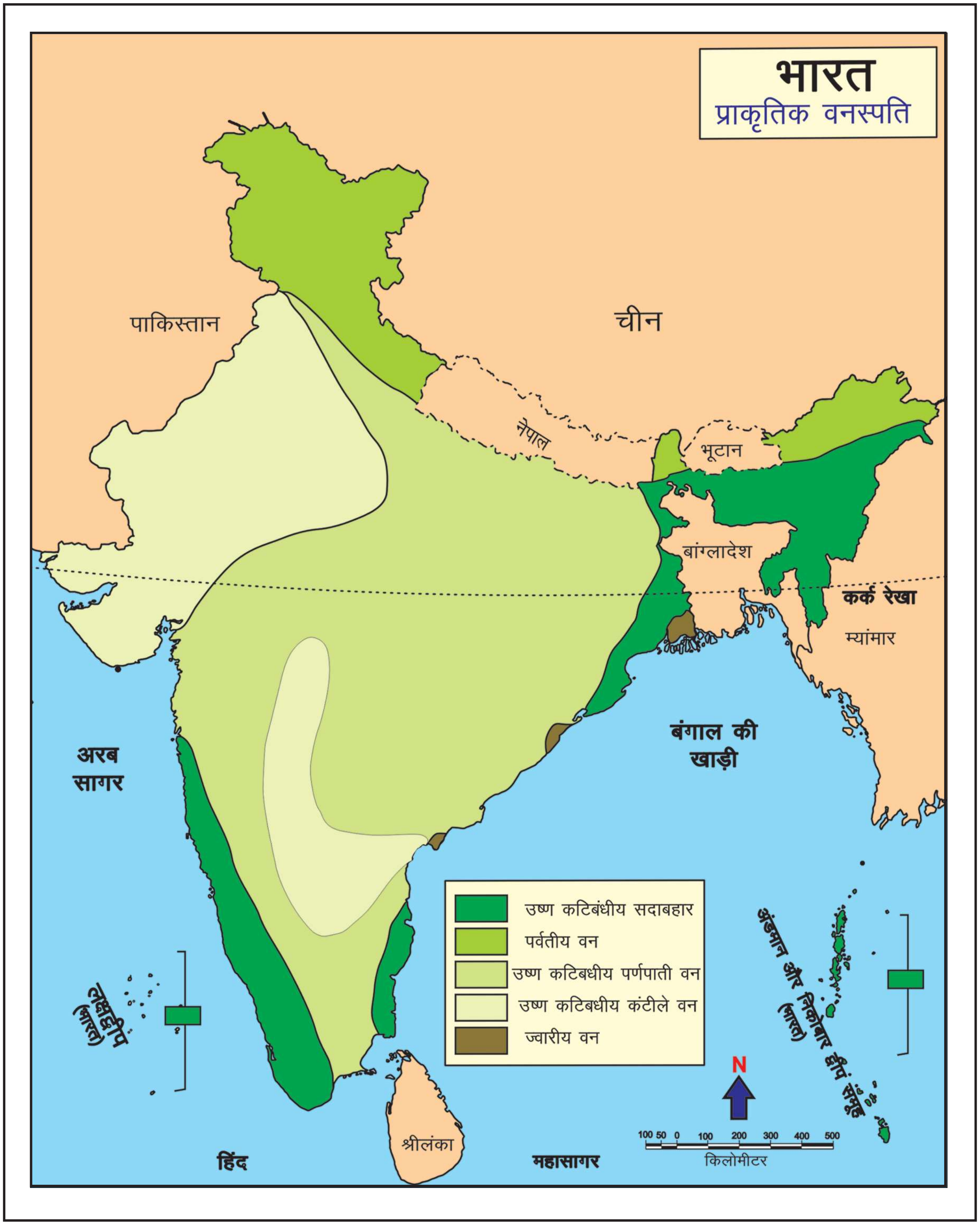

3. पर्वतीय वन

पर्वतीय क्षेत्रों में तापमान की कमी तथा ऊँचाई के कारण अन्य भागों की तुलना में वनस्पति में अधिक अंतर आता है। यह अंतर उष्ण कटिबन्ध के टुण्ड्रा क्षेत्रों जैसा ही होता है । पर्वतीय वनस्पति को दो भागों में बांटा जा सकता है ।

(अ) प्रायद्वीपीय पर्वतीय वन

1. प्रायद्वीपीय पठार के अधिक ऊंचाई वाले भागों में अविकसित वनों या झाड़ियों के साथ खुली हुई विस्तृत तंरगित घास भूमि भी पाई जाती है ।
2. इन वनों में पेड़ों के नीचे वनस्पति का जाल पाया जाता है। इसमें परपोषी पौधे, काई व बारीक पत्तियें वाले पौधे प्रमुख हैं ।
3. मैग्लोनिया, लारेल, एल्म, सामान्य वृक्ष हैं, सिनकोना व यूकेलिप्टस वृक्षों को विदेशें से लाकर लगाया गया है ।
4. ये वन नीलगिरि, अन्नामलाई, पालनी, पश्चिमी घाट व महाबलेश्वर, सतपुड़ा व मैकल पहाड़ियों पर पाये जाते हैं ।

(ब) हिमालयीन श्रेणी के पर्वतीय वन : हिमालय पर्वतीय प्रदेश में बढ़ती हुई ऊंचाई व तापमान की कमी के कारण प्राकृतिक वनस्पति में अंतर दिखाई देता है। शिवालिक श्रेणियों में 1000 मीटर की ऊँचाई पर पर्वतपदीय क्षेत्र, भाबर व तराई में उष्ण कटिबन्धीय पर्णपाती वन पाये जाते हैं। 1000 से 2000 मीटर की ऊँचाई पर आर्द्र शीतोष्ण कटिबन्धीय सदाबहार वन पाये जाते हैं। ये लम्बे पेड़ों से युक्त घने वन हैं । पूर्वी हिमालय में ओक तथा चेस्टनट, पश्चिमी हिमालय में चीड़ तथा 2000 से 3000 मीटर की ऊंचाई वाले भागों में देवदार, सिल्वर फर, स्प्रूस कम घने रूप में मिलते हैं। कम ऊँचाई वाले भागों में साल मुख्य वृक्ष हैं। जहां तापमान कम तथा वर्षा 100 से.मी. से कम होती है, वहां अधिक ऊँचाई वाले पहाड़ी ढालों में भूमध्यसागरीय वनस्पति से मिलती जुलती शुष्क शीतोष्ण वनस्पति पायी जाती है। जंगली जैतून, कठोर बबूल एवं कठोर सवाना घास के साथ ओक व देवदार के वृक्ष पाये जाते हैं। 3000 से 4000 मीटर की ऊंचाई पर अल्पाइन वनस्पति पाई जाती है। ये वन कम घने तथा हिमरेखा की ओर बढ़ने पर कम ऊँचे होते जाते हैं । अल्पाइन चरागाह इससे भी अधिक ऊंचाई वाले भागों में मिलते हैं । सिल्वर फर, जूनीपर, बर्च, पाइन कम आकार के वृक्ष मिलते हैं।

पर्वतीय वन क्षेत्र के वन्य जीव : यहां कश्मीरी महामृग, चितरा हिरण, जंगली भेड़, खरगोश तिब्बतीय बारहसिंघा, याक, हिम तेन्दुआ, गिलहरी, रीछ, लालपांडा, घने बालों वाली भेड़ तथा बकरियाँ मुख्य रूप से पाये जाते हैं ।

4. मैंग्रोव वन या ज्वारीय वन

भारत के तटवर्ती क्षेत्रों में जहां ज्वार-भाटा आते हैं, वहां मैग्रोव या ज्वारीय वनस्पति पायी जाती हैं। मैग्रोव एक प्रकार की वनस्पति है जिसकी जड़ें पानी में डूबी रहती है। गंगा, ब्रह्मपुत्र, महानदी, गोदावरी, कृष्णा तथा कावेरी नदियों के डेल्टाई भाग में यह वनस्पति मिलती है। गंगा व ब्रह्मपुत्र के डेल्टा में सुंदरी वृक्ष पाए जाते हैं इससे मजबूत लकड़ी प्राप्त होती है। नारियल, ताड़, क्योड़ा व ऐंगार के वृक्ष भी इन भागों में पाए जाते हैं ।

मैंग्रोव वन क्षेत्र के वन्य जीव : इन वनों में रॉयल बंगाल टाइगर प्रसिद्ध है । इसके अतिरिक्त यहाँ कछुए, मगरमच्छ, घड़ियाल व विभिन्न प्रकार के साँप मिलते हैं ।

5. उष्ण कटिबंधीय कंटीले वन

जिन क्षेत्रों में 70 से.मी. से भी कम वार्षिक वर्षा होती है वहां कटीले वन तथा झाड़ियां पाई जाती हैं। इस प्रकार की वनस्पति देश के उत्तरी-पश्चिमी भागों में पायी जाती है इसके अंतर्गत गुजरात, राजस्थान, मध्यप्रदेश, उत्तर प्रदेश तथा

हरियाणा के अर्ध शुष्क क्षेत्र आते हैं। खजूर, बबूल तथा नागफनी यहां की मुख्य वनस्पति हैं इनकी जड़ें लम्बी तथा जल की तलाश में चारों ओर फैली होती हैं, पत्तियां प्राय: मोटी होती है जिनसे वाष्पीकरण कम हो सके।

कटीले वन तथा झाड़ियों के वन्य जीव : कटीली झाड़ियों में चूहे, खरगोश, लोमड़ी, भेड़िये, जंगली गधा, घोड़े, ऊंट, शेर तथा सिंह पाये जाते हैं ।

भारत के कुछ दलदली भाग प्रवासी पक्षियों के लिए प्रसिद्ध है: शीत ऋतु में साइबेरियन सारस बहुत संख्या में यहाँ आते हैं इन पक्षियों का मनपसंद स्थान कच्छ का रन है। जिस स्थान पर मरूभूमि समुद्र से मिलती है वहाँ लाल सुंदर कलगी वाले फ्लैमिगो हजारों की संख्या में आते हैं।

6.4 औषधीय वनस्पतियाँ

भारत प्राचीन समय से ही जड़ी बूटियों के लिए विख्यात रहा है। आयुर्वेद में लगभग 2,000 पादपों का वर्णन है, जिनमें से कम से कम 500 निरंतर प्रयोग में आते हैं। भारत में प्राय: औषधि के लिए प्रयोग होने वाले कुछ प्रमुख पादप हैं- सर्पगंधा, तुलसी, नीम, जामुन, बबूल, कचनार व अर्जुन आदि हैं।

संर्पगंधा	-	रक्तचाप के उपचार के लिए
तुलसी	-	जुकाम और खांसी तथा कई अन्य रोगों के लिए
नीम	-	जैव व जीवाणु प्रतिरोध हेतु
जामुन	-	पाचन क्रिया को ठीक करने, मधुमेह में उपयोगी
बबूल	-	फुन्सी में लाभदायक व शारीरिक शक्ति में वृद्धि हेतु उपयोगी
कचनार	-	फोड़ा व दमा रोग के लिए उपयोगी
अर्जुन	-	कान का दर्द ठीक करने व रक्तचाप को नियंत्रित करने के लिए

6.5 वनों का महत्व

वन राष्ट्रीय संपदा है। यह मानव के लिए विभिन्न प्रकार से उपयोगी हैं । वन उत्पाद व संरक्षण दोनों प्रकार के कार्य करते हुए देश के आर्थिक विकास में योगदान देते हैं । वनों से हमें दो प्रकार के लाभ प्राप्त होते हैं। प्रत्यक्ष लाभ एवं अप्रत्यक्ष लाभ।

प्रत्यक्ष लाभ

वनों से हमें इमारती लकड़ी, ईंधन की लकड़ी, पशुओं के लिए चारा, लघु और कुटीर उद्योगों के लिए कच्चामाल, मूल्यवान छोटे उत्पाद, (फल, फूल, घास एवं पत्तियां) तथा औषधियों हेतु कच्ची सामग्री प्राप्त होती है। यह अनेक लोगों के लिए आजीविका का मुख्य साधन है।

अप्रत्यक्ष लाभ

1. वनों के प्रत्यक्ष लाभों से भी अत्यधिक महत्वपूर्ण अप्रत्यक्ष लाभ हैं। वन हमारी प्रकृति एवं संस्कृति के अभिन्न अंग हैं। ये मानवीय मूल्यों में वृद्धि करते हैं, आत्मिक शक्ति प्रदान करते हैं, तथा मनोरंजन के आश्रय स्थल हैं ।
2. वन वायु के तापमान को प्रभावित करते हैं। पवनों की गति को नियन्त्रित करते हैं तथा वर्षा करके जलवायु को नियन्त्रित करते हैं ।
3. वन नदियों के जलप्रवाह को नियन्त्रित करके बाढ़ नियन्त्रण एवं मिटटी के अपरदन को सीमित करते हैं ।

4. वन अपने पेड़ों की पत्तियां, कोपले, टहनियां शाखाएं विघटन के बाद ह्युमस का निर्माण कर मिट्टी की उर्वरा शक्ति को बढ़ाते हैं ।
5. वन पक्षियों तथा जीव-जन्तुओं के प्राकृतिक आश्रय स्थल है ।
6. वन प्राकृतिक सौन्दर्य के प्रतीक हैं ।
7. वन प्राकृतिक संतुलन के स्त्रोत हैं ।

6.6 वन संरक्षण के उपाय

वन राष्ट्रीय सम्पदा है। इस संसाधन की कमी से उत्पन्न समस्याओं को देखते हुए इनका संरक्षण व संवर्द्धन आवश्यक है। मनुष्य की आवश्यकताएँ अनंत है जबकि प्रकृति प्रदत्त संसाधन सीमित। अतः वृक्षारोपण को प्रोत्साहित करने के प्रयास सरकार द्वारा किए गए हैं **वन संरक्षण हेतु निम्नलिखित उपाय किए गए हैं**-

1. वनों के विनाश की खतरनाक प्रवृत्ति को रोकने की तत्काल आवश्यकता है। राष्ट्रीय वन नीति का मुख्य उददेश्य पर्यावरणीय स्थिरता और पारिस्थितिक संतुलन बनाए रखना है ।
2. वन संरक्षण कानून 1980 वनों के विनाश तथा वनभूमि का दूसरे कार्यो के लिए उपयोग को रोकना है ।
3. सामाजिक वानिकी और कृषि वानिकी का मुख्य उद्देश्य किसानों के लिए ईंधन हेतु लकड़ी एवं छोटे मोटे काष्ट संसाधन को जुटाना है। इसके द्वारा किसानों को वृक्षों को रोपने के लिए प्रोत्सहित किया जाता है ।
4. वन रोपण एवं बंजर भूमि का विकास ।
5. मौजूदा वनों में पुनःरोपण ।
6. वनों की नियन्त्रित एवं वैज्ञानिक विधि से कटाई ।
7. वनों को आग से बचाना इसके लिए निरीक्षण व अनुवीक्षण मीनारों की स्थापना ।
8. पशुचारण और ईंधन हेतु वृक्षों व झाड़ियों की कटाई पर रोक ।
9. इमारती लकड़ी के व्यापार को सीमित व नियंत्रित करना ।
10. झूमिंग कृषि को नियंत्रित करना।
11. दीमक, सूंडी, झींगुर, गुबरेला जैसे हानिकारक कीटों पर नियन्त्रण ।
12. कृषि वानिकी, विस्तार वानिकी, रक्षा पंक्ति वानिकी, सामाजिक वानिकी का विकास तथा वन संरक्षण, चिपको आंदोलन एवं वन महोत्सव के प्रति लोगों में चेतना विकसित करना इत्यादि वन संरक्षण के उपायों में सम्मिलित है।

6.7 वन्य जीव संरक्षण

भारत एक वन्य जीव संपन्न देश है। भारत में संसार की लगभग 6.5% वन्य जीव प्रजातियाँ पाई जाती हैं। विशिष्ट वन्य जीव सिंह, बाघ, हाथी, हिरण, बारहसिंघा, तेंदुआ, गैंडा, सोन चिड़िया, बतख, मगरमच्छ, कछुआ, छिपकली एवं अजगर है। वनों के विनाश ने पेड़-पौधों और वन्य जीवन के लिए संकट उत्पन्न कर दिया है जिससे कई वन्य पशु-पक्षी प्रजातियां विलुप्त होने के कगार पर पहुंच गई हैं। कभी पूरे भारत में हाथी पाये जाते थे, लेकिन अब ये महाराष्ट्र मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़ तथा आन्ध्रप्रदेश से भी गायब होते जा रहे हैं। सोन चिड़िया एवं एक सींग वाले गेंडे भी लुप्त हो रहे हैं। भूतपूर्व राजाओं, राजकुमारों और ब्रिटिश अफसरों द्वारा आखेट से तथा चरवाहों द्वारा चोरी से वनों में घुसपैठ एवं शिकार करने से वन्य जीव विलुप्त होने की कगार पर पहुँच गए हैं। इसलिए वन प्राणी संरक्षण आवश्यक है । वन्य

प्राणियों की सुरक्षा व संरक्षण हेतु देश में 89 राष्ट्रीय उद्यान एवं लगभग 49 वन्य जीव अभ्यारण्य और कई चिड़ियाघर देश की वन सम्पदा और जीव संपत्ति की रक्षा के लिए स्थापित किए गए हैं। ये 1.56 लाख वर्ग कि.मी. में फैले हैं। जो देश के कुल क्षेत्रफल का 4.7 प्रतिशत भाग है। देश के प्रमुख राष्ट्रीय उद्यान व अभ्यारण्यों को दिए गए भारत के मानचित्र में देखिए ।

संरक्षण के उपाय

संसार की 5 लाख जीव प्रजातियों में से लगभग 75,000 भारत में हैं। पक्षियों की लगभग 12,000 प्रजातियां एवं 900 उपजातियां भारत में विद्यमान हैं । प्रकृति वैज्ञानिकों के प्रयासों से वन्य जीवों के संरक्षण का आंदोलन प्रांरभ हुआ है।

1. 1972 में भारत में वन्य जीव सुरक्षा अधिनियम पारित हुआ । यह कानून संकट ग्रस्त वन्य जीवों को सुरक्षा और संरक्षण प्रदान कर संबंधित प्रजातियों के व्यापार पर रोक लगाता है।
2. 1973 में बाघ विकास कार्यक्रम परियोजना प्रारंभ की गई। आज देश के 14 राज्यों में लगभग 27 बाघ आरक्षित क्षेत्र हैं ।
3. 1975 में मगर प्रजनन एवं प्रबन्धन परियोजना प्रांरभ कर मगरों को संरक्षित किया गया ।
4. हाथियों की संख्या में वृद्धि करने एवं उनको प्राकृतिक स्वरूप में बनाए रखने के लिए हाथी परियोजना शुरू की गई इस परियोजना के अंर्तगत आर्थिक व वैज्ञानिक सहायता उपलब्ध कराई जाती है ।
5. विलुप्त होती शेर जाति को संरक्षित करने हेतु प्रोजेक्ट टाइगर शुरू किया गया। इसके अन्तर्गत 17 टाइगर रिजर्व स्थापित किये गये हैं । देश में सिहों का प्राकृतिक आवास स्थल गुजरात का गिर जंगल है ।
6. भारत में चिड़ियाघरों के प्रबन्धन एवं देखभाल के लिए केन्द्रीय चिड़ियाघर प्राधिकरण का गठन किया गया है। इसे भारत में विद्यमान लगभग 200 चिड़िया घरों के क्रियाकलापों के संयोजन का दायित्व सौंपा गया है ।
7. देश में 14 जीवमण्डल निलय (आरक्षित क्षेत्र) स्थापित किये गये हैं। इनमे से सुन्दर वन (पश्चिम बंगाल), नंदादेवी (उत्तराखंड), मन्नार की खाड़ी (तमिलनाडु), नीलगिरि (केरल, कर्नाटक तथा तमिलनाडु) की गणना विश्व के जीव मण्डल निलय में की जाती है। अन्य जीव मण्डल नाकरेक, ग्रेट निकोबार, मानस, सिमलीपाल, दिहांग-दिबांग, डिब्रु साइकवोबा, अगस्तमलाई, कंचनजंगा, पचमढ़ी, अचानकमर- अमरकंटक हैं। मानचित्र में प्रमुख जीव मण्डलों की देश में राज्यवार स्थिति देखिए।

6.8 मध्यप्रदेश में जीवजन्तु, राष्ट्रीय उद्यान व अभ्यारण्य

वन सम्पदा की दृष्टि से मध्यप्रदेश सम्पन्न राज्य है। यहां कुल भूमि का लगभग 30 प्रतिशत भाग वनों से आच्छादित है, जिनमें विभिन्न प्रकार के वन्य पशु एवं जीव जन्तु पाये जाते हैं ।

राष्ट्रीय उद्यान

राष्ट्रीय उद्यान तुलनात्मक रूप से एक विस्तृत क्षेत्र है जहां एक या अनेक पारिस्थितिक तंत्र पाये जाते हैं। यह क्षेत्र मानव के शोषण और अधिग्रहण के द्वारा परिवर्तित नहीं हुआ है । विशिष्ट वैज्ञानिक शिक्षा और मनोरंजन के लिए इसके पेड़-पौधे, जीव-जन्तुओं की प्रजातियों को भू-आकृतिक स्थलों और आवासों के साथ संरक्षित किया गया है। राष्ट्रीय उद्यान में शिकार और चराई पूर्णतया वर्जित होते हैं । राष्ट्रीय उद्यानों में मानवीय हस्तक्षेप पूर्णतया प्रतिबंधित होता है ।

वन्य प्राणी अभ्यारण्य

वन्य प्राणी अभ्यारण्य राष्ट्रीय उद्यानों के समान ही है । ये वन्य प्राणियों को संरक्षित और प्रजातियों को सुरक्षित करने के प्रति समर्पित है। अभ्यारण्य में अनुमति के बिना शिकार करना मना है, लेकिन चराई और गौ-पशुओं का आना जाना नियमित होता रहता है । अभ्यारण्य में मानवीय क्रियाकलापों की अनुमति होती है ।

बहुउद्देशीय जीव आरक्षित क्षेत्र

ये जैव विविधता, पेड़-पौधे, जीव जन्तुओं और सूक्ष्म जीवों को समग्र रूप में सुरक्षित करने के लिए आरक्षित क्षेत्र हैं यह प्राकृतिक क्षेत्र वैज्ञानिक अध्ययन के लिए हैं। यहां मानव हस्तक्षेप की स्वीकृति नहीं है।

मध्यप्रदेश के प्रमुख वन्य-पशु, जीव व पक्षी, काला हिरण, तेन्दुआ, चिंकारा, बन्दर, गौर, नीलगाय, चीतल, सांभर, शेर, भालू घड़ियाल, मगर, कछुआ, सोन चिड़िया, खरमौर आदि हैं। इन वन्य पशुओं, जीवों व पक्षियों को सुरक्षित आवास उपलब्ध कराने एवं प्रजातीय सुरक्षा हेतु वन्य जीव अभ्यारण्य एवं राष्ट्रीय उद्यान विकसित किये गये हैं। मध्यप्रदेश में वन्य जीवों को सुरक्षित करने हेतु राष्ट्रीय उद्यान एवं वन्य जीव अभ्यारण्य विकसित किये गये हैं, देखिए परिशिष्ट क्र.-1। मध्यप्रदेश में वन्य जीव अभ्यारण की विस्तृत जानकारी परिशिष्ट क्र. 1 पर दी गयी है।

मध्य प्रदेश के राष्ट्रीय उद्यान

क्र.	नाम	जिला	क्षेत्रफल (वर्ग कि.मी.)	मुख्य प्राणी
1	कान्हा	मण्डला	940.00	बाघ, तेन्दुआ, चीतल, सांभर
2	बाँधवगढ़	उमरिया	437.00	बाघ, तेन्दुआ, चीतल, सांभर
3	माधव	शिवपुरी	375.00	तेन्दुआ, चीतल, सांभर
4	पन्ना	पन्ना	543.00	बाघ, तेन्दुआ, चीतल, सांभर चिंकारा
5	संजय	सीधी	467.00	बाघ, तेंदुआ, चीतल
6	पेंच	सिवनी-छिन्दवाड़ा	293.00	बाघ, तेन्दुआ, चीतल, गौर, सांभर
7	सतपुड़ा	होशंगाबाद	585.00	बाघ, तेन्दुआ, सांभर, चीतल, गौर
8	वन विहार	भोपाल	4.45	प्रदेश के सभी वन्य प्राणी
9	जीवाश्म	मण्डला	0.27	वनस्पति जीवाश्म

उपरोक्त तालिका में मध्यप्रदेश के राष्ट्रीय उद्यानों को दर्शाया गया है। म.प्र. के राष्ट्रीय उद्यान एवं अभ्यारण्यों की स्थिति को भारत के दिए गए वन्य प्राणी संरक्षण मानचित्र में देखिए।

शब्दावली

पर्णपाती : ऐसे वन जो वर्ष की एक ऋतु विशेष में अपने वृक्षों से पत्ते गिरा देते हैं।

भाबर : हिमालय क्षेत्र की पहाड़ियों के गिरीपाद प्रदेश में कंकड़ पत्थरों की एक पतली पेटी नदी की धारा के समानांतर फैली है जो लगभग 8 से 16 कि.मी. चौड़ी है उसे भाबर कहते हैं।

तराई : भाबर से लगा हुआ अधिक नम तथा दलदली क्षेत्र जहां घने वन तथा विविध वन्य जीव पाए जाते हैं।

सामाजिक वानिकी : वृक्षारोपण को प्रोत्साहन देने का कार्यक्रम।

पारिस्थितिक तंत्र : भौतिक पर्यावरण और उसमें रहने वाले जीवों के सम्मिलित रूप को पारिस्थितिक तंत्र या पारितंत्र कहते हैं।

प्रवासी पक्षी : उत्तरी एशिया से भारत में अल्पकाल के लिए आने वाले पक्षियों को प्रवासी पक्षी कहा जाता है।

जैव मण्डल संरक्षित क्षेत्र: पारिस्थितिक तंत्र के संरक्षण तथा आनुवांशिक विविधता के परिरक्षण के उद्देश्य से स्थापित क्षेत्र।

अभ्यास

सही विकल्प चुनकर लिखिए -

अ. भारत में सबसे कम वन क्षेत्र वाला राज्य है -

(i) असम में (ii) राजस्थान में
(iii) झारखण्ड में (iv) हरियाणा में

ब. सुन्दरी वृक्ष पाया जाता है-

(i) उष्णकटिबंधीय वन में (ii) हिमालयीन वन में
(iii) मैंग्रोव वन में (iv) उष्ण कटिबन्धीय पर्णपाती वन

स. राजस्थान की प्राकृतिक वनस्पति है -

(i) आर्द्र उष्ण कटिबन्धीय सदाबहारवन (ii) आर्द्र उष्णकटिबन्धीय अर्घ सदाबहार वन
(iii) उष्ण कटिबन्धीय कटीले वन (iv) अल्पाइन प्रकार के वन

द. भारतीय सिंहो का प्राकृतिक आवास आरक्षित क्षेत्र है -

(i) गुजरात गिर क्षेत्र (ii) असम का काजीरंगा वन क्षेत्र
(iii) पश्चिमी बंगाल का सुन्दरवन (iv) नीलगिरि वन क्षेत्र

अति लघुउत्तरीय प्रश्न

1. प्राकृतिक वनस्पति से क्या तात्पर्य है ?
2. वन किसे कहते है ?
3. मैग्रोव वन किसे कहते हैं ?
4. देशज व विदेशज वनस्पति से क्या आशय है ?
5. अभ्यारण्य किसे कहते हैं ?
6. प्रशासनिक आधार पर वनों का वर्गीकरण कीजिए।

लघुउत्तरीय प्रश्न :

1. प्रवासी पक्षी क्या हैं ?
2. वन संरक्षण से क्या तात्पर्य है ?
3. भारत की हिमालयी क्षेत्र की वनस्पति का वर्णन कीजिए।
4. राष्ट्रीय उद्यान एवं अभ्यारण्य में अंतर स्पष्ट कीजिए ।
5. भारत में पौधों तथा वनस्पति का वितरण किन तत्वों पर निर्भर करता है, लिखिए।
6. सदाबहार व पर्णपाती वनों में अंतर स्पष्ट कीजिए ।
7. उष्ण आर्द्र सदाबहार वनों की प्रमुख विशेषताओं का उल्लेख कीजिए ।
8. मानव के लिए वन किस प्रकार उपयोगी हैं, वर्णन कीजिए।
9. वनों के प्रत्यक्ष लाभ की तुलना में अप्रत्यक्ष लाभ कैसे ज्यादा महत्वपूर्ण हैं? समझाइए।

दीर्घउत्तरीय प्रश्न

1. भारत की मुख्य वनस्पति के प्रकारों का वर्णन कीजिए ।
2. वन संसाधनों के संरक्षण की आवश्यकता क्यों है ? उनके संरक्षण के प्रमुख उपाय बताएं ।
3. वन्य जीवों के संरक्षण के लिए किए गये उपायों को लिखिए।

मानचित्र कार्य

भारत के रेखा मानचित्र में निम्नलिखित क्षेत्रों को दर्शाइए –

1. उष्ण कटिबन्धीय सदाबहार वन एवं ज्वारीय वन ।
2. भरतपुर पक्षी अभ्यारण्य एवं साइलेण्ट वैली।
3. कान्हा किसली एवं कार्बेट नेशनल पार्क ।
4. नंदा देवी, नीलगिरि, सुन्दर वन, जैव आरक्षित क्षेत्र ।

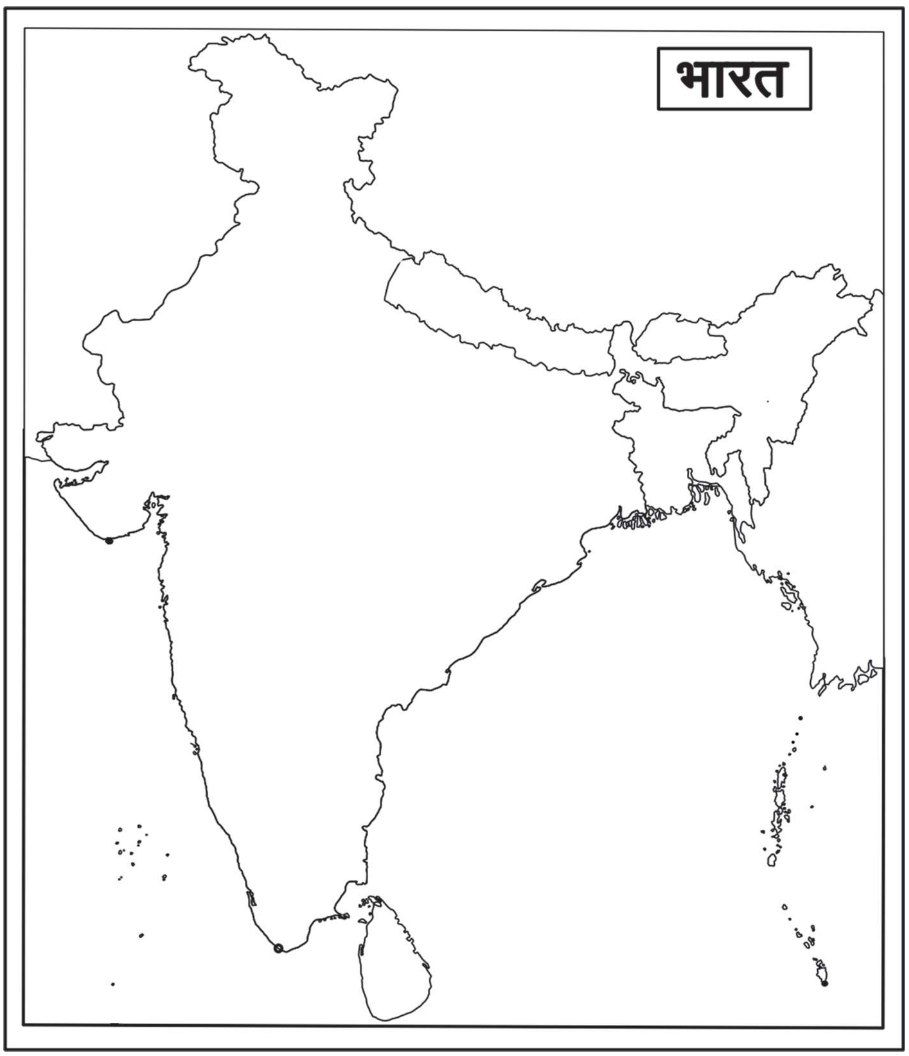

प्रायोजना कार्य

- अपने आसपास मिलने वाले औषधीय वनस्पतियों को एकत्र कर नमूनों के साथ विवरणिका एलबम तैयार कीजिए। इसमें औषधीय वनस्पति का उपयोग भी लिखिए।